भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार

2003

प्रशस्ति

प्रो. के.के.तलवार

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधान योगदानों के लिए दिए जाने वाले परिषद के सबसे पुराने बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने वर्ष 1953 में की थी।

वर्ष 2003 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक एवं हृदय रोग विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.के.के.तलवार को "ट्रॉपिकल हृद्पेशी" रोगों में अंतर्हृद्पेशी बॉयप्सी की उपयोगिता" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

प्रो. तलवार ने नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में अंतर्हृद्पेशी बॉयप्सी की तकनीक की शुरुआत की और विभिन्न ट्रॉपिकल हृदय पेशी रोगों का अध्ययन करने में इसका व्यापक प्रयोग किया। उन्होंने अविशिष्ट महाधमनी धमनीशोथ (टाकायासू धमनीशोथ), रुमेटी हृदय रोग, अंतर्हृद्पेशी तंतुमयता एवं विस्फारित हृद्पेशीविकृति की स्थितियों में हृद्पेशी की संबद्धता का अध्ययन किया है । विश्व साहित्य में अंतर्हृद्पेशी बॉयप्सी का प्रयोग करते हुए टाकायासू धमनीशोथ में हृद्पेशी की संबद्धता के अध्ययन का यह प्रथम वर्णन है ।

प्रो. तलवार की चिकित्सीय क्षेत्र में व्यापक संबद्धता रही है जिसमें सभी प्रकार की नैदानिक एवं मध्यस्थ विधियां सम्मिलित हैं । उन्होंने नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के हृद् वक्ष केन्द्र में एरिदमिया सेक्शन, हृद् पात और हृद प्रतिरोध कार्यक्रम जैसे चिकित्सीय विषयों तथा हृद्पेशी दुष्क्रिया में ऑटोलॉगस मूल कोशिका प्रतिरोपण को स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

इन सुविधाओं के विकास से देश के भीतर जरूरतमंद रोगियों को ये उपचार विधियां प्रदान करना संभव हुआ है ।

प्रो. तलवार अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हैं, जिनमें डॉ बी.सी.रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार, रैनबैक्सी अनुसंधान पुरस्कार,अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार, डॉ सुजॉय बी.रॉय एवं श्याम लाल सक्सेना पुरस्कार सम्मिलित हैं । वे अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थाओं के फेलो हैं । प्रो. तलवार को 174 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

BASANTI DEVI AMIR CHAND PRIZE
2003

CITATION

PROF. K. K. TALWAR

The Basanti Devi Amir Chand Prize is the earliest instituted award of ICMR, founded in 1953 by late Major General Amir Chand for the significant research contributions made by scientists in the field of biomedical sciences.

The award for the year 2003 is being presented to Prof. K. K. Talwar, Head, Department of Cardiology and Director, Postgraduate Institute of Medical Education and Research (PGIMER), Chandigarh for his research work on "Utility of Endomyocardial Biopsy (EMB) in Tropical Heart Muscle diseases."

Prof.Talwar initiated the technique of Endomyocardial biopsy at All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), New Delhi and used it extensively to study various tropical heart muscle diseases. He studied the myocardial involvement in non-specific aortoarteritis (Takayasu arteritis), rheumatic heart disease, endomyocardial fibrosis and dilated cardiomyopathy. It is for the first time in the world literature that myocardial involvement has been studied in Takayasu arteritis using EMB.

Prof.Talwar's involvement in the clinical field is extensive, including all kinds of diagnostic and interventional procedures. He has a significant contribution in the establishment of clinical disciplines such as Arrhythmia section, Heart failure and Cardiac transplant programme and autologous stem cell transplantation in myocardial dysfunction at Cardiothoracic Centre (CTC) at AIIMS, New Delhi.

The development of such facilities has made it possible to provide these treatments to needy patients within the country.

Prof. Talwar has been felicitated with many national and international awards including Dr. B.C. Roy National Award, Ranbaxy Research Award, Amrut Mody Unichem Prize, Dr. Sujoy B. Roy and Shyam Lal Saksena Award. He is a fellow of many national and international scientific bodies. Prof. Talwar has more than 174 research publications to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

जालमा न्यास निधि व्याख्यान पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

डॉ जिजी जैसमीन इबेनज़र

जालमा न्यास निधि व्याख्यान पुरस्कार एशिया के लिए जापान कुष्ठरोग मिशन द्वारा प्रदान किए गए धन सहाय से भारत में कुष्ठरोग पर मिशन के कार्य की स्मृति में प्रारम्भ किया गया था । यह पुरस्कार कुष्ठरोग और अन्य माइकोबैक्टीरियल रोगों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए किसी श्रेष्ठ वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है ।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार कारीगिरी, तमिल नाडु स्थित शीफलीन कुष्ठरोग अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र के ऊतकविकृतिविज्ञान एवं प्रायोगिक विकृतिविज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ जिजी जैसमीन इबेनज़र को "बहुऔषध चिकित्सा युग में कुष्ठरोग के विकृतिविज्ञान" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

डॉ इबेनज़र एक दशक से अधिक अवधि से कुष्ठरोग के क्षेत्र में सुसंगत शोध कार्य से सक्रिय रूप से संबद्ध रही हैं । वे कुष्ठरोग की विकृति के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन की दिशा में समर्पित रही हैं । उन्होंने कुष्ठरोग में निदान एवं चिकित्सा, औषध प्रतिरोध तथा कुष्ठरोग के संचरण के क्षेत्रों में प्रमुख योगदान दिया है । उन्होंने आण्विक जैविकी अध्ययनों के माध्यम से असामान्य ऊतकविकृति सहित कुष्ठरोगियों में *एम.लेप्री* के प्रतिरोध की प्रकृति, 12 माह और 24 माह की बहुऔषध चिकित्सा की प्रभावकारिता का विस्तृत अध्ययन किया है ।

उन्हें अकवर्थ स्मारक पुरस्कार और श्रीमती कुन्ती देवी पुरस्कार प्राप्त हुआ है । उनके शोध परिणाम राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तर के जर्नलों में प्रकाशित हुए हैं तथा उन्हें 31 शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है जिनमें अधिकांश कुष्ठरोग के नेत्रीय ऊतक विकृति के अध्ययन से संबद्ध हैं । वे अनेक वैज्ञानिक संगठनों की आजीवन सदस्य हैं ।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

JALMA TRUST FUND ORATION AWARD
2002

CITATION

DR. GIGI JASMINE EBENEZER

The JALMA Trust Fund Oration Award was instituted with funds donated by the Japan Leprosy Mission for Asia to commemorate the Mission's work on leprosy in India. This award is given to an eminent scientist for significant achievements in the field of Leprosy and other Mycobacterial Diseases.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. Gigi Jasmine Ebenezer, Head, Dept of Histopathology & Experimental Pathology, Schieffelin Leprosy Research and Training Centre, Karigiri, Tamilnadu for her research work on "Pathology of Leprosy in the Multi Drug Therapy (MDT) era".

Dr.Gigi Jasmine Ebenezer has been actively engaged in consistent leprosy research work for over a decade. She has been devoted towards studying various aspects of leprosy pathology. Her major contributions in leprosy have been in the areas of diagnosis and treatment, drug resistance and transmission of leprosy. She has extensively investigated the effectiveness of 12 months and 24 months MDT and the nature of resistance in *M.leprae* through molecular biology studies in unusual histopathological cases of leprosy.

She has been awarded the Ackworth Memorial Award and Smt. Kunti Devi Award. Her findings have been published in both national and international journals and has 31 publications to her credit mostly in ocular histopathology of leprosy. She is a life member of several scientific organisations.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

अल्पविकसित क्षेत्रों हेतु आई सी एम आर पुरस्कार
2002

प्रशस्ति

डॉ अनिल प्रकाश

अल्पविकसित क्षेत्रों हेतु आई सी एम आर पुरस्कार देश के अल्पविकसित भागों में जैवआयुर्विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में सम्पन्न उत्कृष्ट योगदान के लिए किसी श्रेष्ठ वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार डिब्रूगढ़ स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के सहायक निदेशक डॉ अनिल प्रकाश को "रोगवाहक जैविकी एवं नियंत्रण" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

डॉ प्रकाश मलेरिया के अंतर्गत रोगवाहक जैविकी एवं नियंत्रण तथा मच्छरों के वर्गीकरणविज्ञान पर शोध कार्य से संबद्ध रहे हैं जिनका प्रमुख अध्ययन भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में वन मलेरिया के मुख्य रोगवाहक *एनॉफिलीज डाइरस* की बायोनॉमिक्स और इस मच्छर द्वारा संचरित मलेरिया पर केन्द्रित रहा है । डॉ. प्रकाश और उनके दल को भारत में *एनॉ.डाइरस* के दिन के विश्राम स्थलों पर सर्वप्रथम रिपोर्ट प्रस्तुत करने का श्रेय प्राप्त है । उन्होंने वनों में स्थित शिविरों मे *एनॉ.डाइरस* द्वारा संचरित मलेरिया के नियंत्रण के लिए एक मोड्यूल को भी विकसित किया है जो असम तेल अन्वेषण क्षेत्रों में तेल कम्पनियों के लिए उपयोगी रहा है।

डॉ प्रकाश ने राष्ट्रीय पर्यावरण विज्ञान अकादमी द्वारा *"साइंटिस्ट ऑफ दि इयर"* पुरस्कार प्राप्त किया है और वे देश की अनेक वैज्ञानिक एवं एकेडेमिक संस्थाओं के सदस्य हैं । उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक जर्नलों में 70 शोध पत्रों को प्रकाशित किया है ।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

ICMR PRIZE FOR UNDER DEVELOPED AREAS
2002

CITATION

DR. ANIL PRAKASH

The ICMR Prize for underdeveloped areas is awarded to an eminent scientist for outstanding contribution in any field for biomedical sciences based / carried out in underdeveloped parts of the country.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. Anil Prakash, Assistant Director, Regional Medical Research Centre (RMRC), Dibrugarh for his research work on "Vector Biology & Control".

Dr. Prakash has been working in the area of Malaria – vector biology, control and mosquito systematics, primarily focussing on bionomics of *Anopheles dirus*, the major vector of forest malaria in north–eastern region of India and malaria transmitted by this mosquito. Dr. Prakash and his group are the first to report the day resting habitats of *A. dirus* in India. He has also developed a module to control malaria transmitted by *A. dirus* in forest based camps which has been helpful to the oil companies in the oil exploration areas in Assam. Through his work he has contributed to enriching the existing knowledge on biology of malaria vectors, vector control, malaria transmission, epidemiology and control of malaria in the north– eastern region of India.

Dr. Prakash is a recipient of the 'Scientist of the year' award by National Environment Science Academy and is a member of many scientific and academic bodies of the country. He has published 70 research papers in national and international scientific journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

डॉ चित्रा मण्डल

आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना कोलकाता स्थित स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के चिकित्साविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ के.एन.सेन ने वर्ष 1977 में की थी तथा यह पुरस्कार श्रेष्ठ महिला वैज्ञानिकों को जैवआयुर्विज्ञान में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया जाता है ।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार कोलकाता स्थित भारतीय रसायन जैविकी संस्थान की वरिष्ठ सहायक निदेशक डॉ. चित्रा मण्डल को" चिकित्साविज्ञान में जैवअणुओं का ग्लाइकोसाइलेशन तथा आयुर्विज्ञान अनुसंधान में उनके प्रयोग" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

डॉ मण्डल विगत 20 वर्षों से चिकित्साविज्ञान में जैवअणुओं के ग्लाइकोसाइलेशन की भूमिका तथा आयुर्विज्ञान अनुसंधान में उनके संभावित प्रयोगों को ज्ञात करने से सक्रिय रूप से संबद्ध रही हैं । उनके शोध कार्यों में लिम्फोब्लास्ट्स की कोशिका सतह का सियालिलेशन और बच्चों में तीव्र लिम्फोब्लास्टिक श्वेतरक्तता (ए एल एल) में उनका नियमन, मानव सी-प्रतिक्रियाशील प्रोटीनों के संभावित चिकित्सीय प्रयोग हेतु उनकी खोज, भारतीय लीशमैनियता में परपोषी और परजीवी विशिष्ट जैवअणुओं का ग्लाइकोसाइलेशन सम्मिलित है ।

डॉ मण्डल के योगदान से इन क्षेत्रों में जानकारी को बढ़ाने और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में निश्चित रूप से सहायता मिली है जो तीव्र लिम्फोब्लास्टिक श्वेतरक्तता और अतंरांग लीशमैनियता ग्रस्त रोगियों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने और चिकित्सा व्यवहारों को बेहतर बनाने में उपयोगी हो सकते हैं।

जैविकी रसायन और संबद्ध विज्ञान में डॉ मण्डल के उत्कृष्ट योगदानों की मान्यता में उन्हें श्रीमती चन्दाबेन मोहनभाई पटेल वास्विक पुरस्कार और पी.बी.रामा राव स्मारक पुरस्कार प्राप्त हुआ है । उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नलों में 75 शोध पत्रों को प्रकाशित किया है और उन्हें 6 पेटेंट्स प्राप्त करने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

ICMR KSHANIKA ORATION AWARD
2002

CITATION

DR. CHITRA MANDAL

The ICMR Kshanika Oration Award was instituted in 1977 by Dr.K.N.Sen, former Professor of Medicine, School of Tropical Medicine, Calcutta to be given to eminent women scientists for outstanding contributions in Biomedical Sciences.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. Chitra Mandal, Senior Assistant Director, Indian Institute of Chemical Biology, Kolkata, for her work on "Glycosylation of biomolecules in medicine and their application in medical research".

Dr.Chitra Mandal has been actively engaged in understanding the role of Glycosylation of biomolecules in medicine and their potential applications in medical research for the last 20 years such as Sialylation of cell surface of lymphoblasts and their modulation in Acute Lymphoblastic Leukemia (ALL) in children, exploration of human C-reactive proteins for their potential clinical use, glycosylation of host and parasite specific biomolecules in Indian leishmaniasis.

Dr.Mandal's contribution has certainly helped to advance the knowledge and develop technologies in these fields which can be helpful for improvement of medical practices and betterment of healthcare for patients suffering with ALL & visceral leishmaniasis.

Dr. Mandal has received Smt. Chandaben Mohanbhai Patel Vasvik Award and P. B. Rama Rao Memorial Award in recognition of her outstanding contributions in biological chemistry and allied sciences. She has 75 publications in international and national journals and 6 patents at her credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार
2002

प्रशस्ति

डॉ आलोक धवन

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने की थी ।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार लखनऊ स्थित औद्योगिक विषविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक ई-1 डॉ आलोक धवन को " आनुवंशिकी एवं तंत्रिकाविषविज्ञान" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

जैवचिन्हकों की उपस्थिति की आवश्यकता है जिनसे संभावित जीनविषाक्तता और कैंसरजनकता के विशेष संदर्भ में मानव स्वास्थ्य पर रसायनों के प्रभाव का मूल्यांकन करने में सहायता मिल सकती है । डॉ धवन ने आधुनिक विषविज्ञान के इस उभरते क्षेत्र में पथ प्रदर्शक योगदान दिए हैं । मानव स्वास्थ्य पर औषधियों और रसायनों के प्रतिकूल प्रभावों की निगरानी करने में उनके योगदानों का व्यापक चिकित्सीय उपयोग है ।

डॉ धवन ने प्रभावन और अतिसंवेदनशीलता दोनों के लिए सुग्राही जैवचिन्हकों का प्रयोग करते हुए मानव जीनविषाक्तता की जैवमॉनीटरिंग के क्षेत्र को स्थापित किया है । उन्हें देश में एक ऑटोमेटेड कॉमेट आमापन सुविधा को सर्वप्रथम स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है जिसका प्रयोग उन्होंने मानव जैवमॉनीटरिंग के अध्ययनों और अंतःपात्र एवं अंतर्जीव विधियों से पर्यावरणी रसायनों की जीनविषाक्तता के मूल्यांकन में किया है ।

उन्हें एक स्वस्थ भारतीय आबादी में पुरुषों और महिलाओं में आधारी स्तर की डी एन ए क्षति में सर्वप्रथम एक अंतर प्रदर्शित करने का श्रेय प्राप्त है । इस अध्ययन में पुरुषों में डी एन ए की उच्च क्षति देखी गई जो कैंसर की उच्च संभावना से संबद्ध हो सकती है । एक अन्य अध्ययन में उनके आंकड़ों से पता चला कि धूम्रपान, मांसाहार और आयु से भारतीय पुरुषों की लसीका कोशिकाओं में डी एन ए की क्षति प्रेरित हो जाती है ।

उनके शोध कार्य की मान्यता में डॉ धवन को युवा वैज्ञानिकों हेतु इंसा मेडल तथा सी एस आई आर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित जर्नलों में 40 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है । वे विभिन्न वैज्ञानिक संस्थाओं के सदस्य हैं ।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE
2002

CITATION

DR. ALOK DHAWAN

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. Alok Dhawan, Scientist E-1, Industrial Toxciology Research Centre, Lucknow for his work on “Genetic and Neurotoxicology”.

There is a need to have biomarkers, which may help in assessing the impact of chemicals on human health with particular reference to genotoxicity and carcinogenecity potential. Dr. Alok Dhawan has made pioneering contributions in this upcoming area of modern toxicology. His contributions have far reaching clinical applications in monitoring the adverse health effects of drugs and chemicals on human health.

Dr.Dhawan established the area of biomonitoring of human genotoxicity using sensitive biomarkers, both for exposure as well as susceptibility. He was the first to establish an automated comet assay facility in the country, which he used in human biomonitoring studies and for *in vitro* and *in vivo* genotoxicity assessment of environmental chemicals.

He showed for the first time a difference in the basal level of DNA damage in males and females in a healthy Indian population. The higher DNA damage in men observed in this study could correspond to a higher risk of cancer. In another study, his data revealed that smoking, non-vegetarian food and age induce DNA damage in lymphocytes of Indian males.

In recognition of his work, Dr.Dhawan has been awarded the INSA Medal for Young Scientist and CSIR Young Scientist Award. He has over 40 publications in internationally reputed journals. He is a member of various professional scientific bodies.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार
2002

प्रशस्ति

श्री एस.आर.वैद्य

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने की थी ।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के अनुसंधान अधिकारी श्री एस.आर.वैद्य को " यकृतशोथ विषाणुओं के पर्यावरणी आण्विक विषाणुविज्ञान पर अध्ययन " हेतु उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

श्री वैद्य ने पर्यावरणी नमूनों से यकृतशोथ ए और ई विषाणु की मात्रा का पता लगाने और उनकी पहचान करने के लिए अल्ट्रा फिल्ट्रेशन, अल्ट्रा सेंट्रीफ्युगेशन और आण्विक जैविकी (अर्थात् पॉलीमिरेज़ चेन रिएक्शन) पर आधारित विधियां विकसित की हैं । उनका शोध कार्य आंत्र यकृतशोथ के विषाणुओं के वितरण एवं उनके स्थायित्व का पूर्वानुमान करने के साथ-साथ इन विषाणुओं से संबद्ध खतरों का मूल्यांकन करने में उपयोगी हो सकता है । श्री वैद्य ने सीवेज (मलजल) मज़दूरों के यकृतशोथ ई विषाणु से संक्रमित होने के प्रति वर्धित व्यावसायिक खतरों का भी अध्ययन किया है । वे प्रकोप संबंधी विभिन्न अध्ययनों से भी संबद्ध रहे हैं ।

श्री वैद्य ने अपने शोध कार्य को अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नलों में प्रकाशित किया है ।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE
2002

CITATION

SHRI S. R. VAIDYA

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences.

The award for the year 2002 is being presented to Shri S.R.Vaidya, Research Officer, National Institute of Virology, Pune for his research work on “Studies on environmental molecular virology of hepatitis viruses”.

Shri Vaidya has developed methods based on ultra-filtration, ultra centrifugation and molecular biology (i.e. Polymerase Chain Reaction) for hepatitis A and E virus concentration and detection from environmental samples. His research work may be helpful in predicting the distribution and persistence of enteric hepatitis viruses and also the risk assessment associated with these viruses. Shri Vaidya has also studied the increased occupational risk to sewage workers in acquiring the hepatitis E viral infection. He has been involved in various outbreak investigations.

Shri Vaidya has published his work in international scientific journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

डॉ आलोक ठाकर

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने की थी ।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के कर्णकंठविज्ञान एवं सिर-गला शल्यक्रिया के सह आचार्य डॉ आलोक ठाकर को "सिर एवं गले के कैंसर में उपचार नीतियों के अनुकूलन" पर उनके शोध कार्य हेतु प्रदान किया जा रहा है ।

डॉ ठाकर के शोध कार्य का मुख्य विषय सिर एवं गले के कैंसर की शल्यचिकित्सा के उपरान्त होने वाली अशक्तता को सीमित करने की दिशा में रहा है, जिसके स्थान पर उपचार की अन्य वैकल्पिक विधियों यथा-विकिरण अथवा रसायन-विकिरण का प्रयोग किया जा सकता है । उनका शोध कार्य स्वरयंत्र के कैंसर हेतु अशल्यक चिकित्सा विकल्पों के संबंध में स्वरयंत्र के वर्तमान स्थान और सीमानिर्धारण को पारिभाषित करने और T3 एवं T4 श्रेणी के कैंसर की उन्नत स्थितियों के लिए शल्यक तकनीकों से संबद्ध वाणी के विकास पर केंद्रित है ।

डॉ ठाकर को एन ई एस स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ है । उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 20 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है ।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE
2002

CITATION

DR. ALOK THAKAR

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. Alok Thakar, Associate Professor of Otolaryngology and Head-Neck Surgery, All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), New Delhi for his research work on “Optimizing treatment strategies in head and neck cancers”.

The central theme of Dr.Thakar’s work has been towards limiting the disability following surgical treatment of Head and Neck Cancer, which may be replaced by other alternate therapies i.e. Radiation or Chemo-radiation. His work has focussed on defining the current place and limitations of larynx concerning non-surgical treatment options for cancer larynx and in the development speech concerning surgical techniques for advanced T3 and T4 cancers.

Dr.Thakar has been the recipient of the NES Gold Medal. He has more than 20 publications in international journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार
2002

प्रशस्ति

डॉ कमल सूद

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने की थी ।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के वृक्कविज्ञान के अतिरिक्त आचार्य डॉ कमल सूद को " वृक्क प्रतिरोपण में साइक्लोस्पोरिन के प्रयोग" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

डॉ सूद विगत 10 वर्षों से प्रतिरोपण के पश्चात लघु और दीर्घ काल तक निरोप के विद्यमान रहने में साइक्लोस्पोरिन के प्रयोग से संबद्ध पहलुओं पर अध्ययन करने से संबद्ध रहे हैं। उन्होंने चिकित्सा पर होने वाले व्यय, इसकी जैवउपलब्धता में विभिन्नता, औषधि स्तरों की निकटता से निगरानी के लिए आवश्यक इसके संकीर्ण चिकित्सीय गवाक्ष, संक्रमणों की घटना तथा उनकी चिकित्सा से संबद्ध पारस्परिक क्रियाएं तथा वित्तीय अथवा चिकित्सीय कारणों से औषधि प्रयोग बन्द करने की आवश्यकता जैसे विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन किया है।

डॉ सूद ने युवा अनुसंधानकर्ता पुरस्कार और बंसल व्याख्यान पुरस्कार प्राप्त किए हैं। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में 80 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित किया है । वे विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों के सदस्य हैं ।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE
2002

CITATION

DR. KAMAL SUD

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences.

The award for the year 2002 is being presented to Dr.Kamal Sud, Additional Professor of Nephrology, Postgraduate Institute of Medical Education and Research (PGIMER), Chandigarh for his research work on “Cyclosporine use in kidney transplantation”.

During the last 10 years, Dr.Sud has been involved in studying the issues concerning the use of cyclosporine in short & long term graft survivals after transplantation. The various issues related to the cost of treatment, variability in its bioavailability, its narrow therapeutic window requiring close monitoring of drug levels, the incidence of infections and the drug interactions related to their treatment and the need to withdraw the drug for financial or medical reasons have been studied in detail.

Dr.Sud has received the Young Investigator Award and the Bansal Award Oration. He has more than 80 publications in various national and international journals. He is a member of various scientific organizations.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ पी.एन.राजू व्याख्यान पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

प्रोफेसर उमेश कपिल

डॉ पी. एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक विशेषतया एक चिकित्सक को चिकित्साविज्ञान अथवा जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व के किसी भी विषय में उनके उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की मानव पोषण यूनिट के प्रोफेसर उमेश कपिल को "सूक्ष्मपोषक तत्व और कुपोषण" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

प्रो कपिल मानव पोषण के क्षेत्र में विगत 20 वर्षों से कार्य कर रहे हैं। प्रो कपिल भारत सरकार के विभिन्न विभागों यथा-स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण एवं मानव संसाधन विकास के साथ निकटता से कार्य कर रहे हैं। इन मंत्रालयों की कार्यक्रम गतिविधियों को सुदृढ़ बनाने के लिए अनुसंधान अध्ययनों को पहचान किए गए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में लागू किया गया है । (i) आयोडीनीकृत नमक के लाभ एवं सुरक्षा तथा (ii) स्कूल पूर्व आयु के बच्चों, गर्भवती एवं दुग्धस्रवण संबद्ध महिलाओं में विटामिन ए के प्रयोग के लाभ एवं सुरक्षा पर राष्ट्रीय परामर्श की सिफारिशों को स्वीकार किया गया तथा देश के सभी राज्यों में उन्हें कार्यान्वित करने / अपनाने हेतु भारत सरकार की आधिकारिक नीति के रूप में प्रकाशित किया गया है।

प्रो कपिल ने एकीकृत बाल विकास सेवा योजना कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाने के लिए भी कार्य किया है।

प्रो कपिल ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में 150 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्हें विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं तथा वे विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों के सदस्य हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

DR. P. N. RAJU ORATION AWARD
2002

CITATION

PROF. UMESH KAPIL

Dr. P. N. Raju Oration Award is given to an eminent scientist, preferably a medical person, for his / her work in any subject of national importance in the field of medicine or public health.

The award for the year 2002 is being presented to Prof. Umesh Kapil, Human Nutrition Unit, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi, for his research work on “Micronutrient malnutrition”.

Dr.Umesh Kapil has been pursuing research in the field of Human Nutrition for the last 20 years. Dr.Kapil has been working closely with the different Departments of Govt. of India namely the Ministries of Health and Family Welfare, Industries, Food Processing and Human Resources Development. The research studies have been implemented in the identified priority areas to strengthen the programme activities of these ministries. The recommendations of the National Consultation on ‘Benefits & Safety of iodized salt’ and ‘Benefits and safety of administration of Vitamin A to pre-school children, pregnant and lactating women’ were accepted and published as official policy of the Govt. of India to be implemented / adopted by all states in the country.

Dr.Kapil has also worked towards the strengthening of the Integrated Child Development Services Scheme Programme.

Dr.Kapil has published more than 150 research papers in the field of public health in various national & international journals. He is the recipient of various awards and is a member of many scientific organizations.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ वाई.एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

डॉ अमिताभ मुखोपाध्याय

डॉ वाई. एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार हर दूसरे वर्ष कैंसर के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए किसी उत्कृष्ट वैज्ञानिक को दिया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय प्रतिरक्षाविज्ञान संस्थान के स्टाफ वैज्ञानिक IV डॉ अमिताभ मुखोपाध्याय को "परपोषी रोगजन अन्योन्यक्रिया" पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ मुखोपाध्याय के कार्य के द्वारा भक्षककोशिकाओं में जीवित बने रहने के लिए रोगजन द्वारा अंतर्कोशिकीय ट्रैफिकिंग पाथवेज़ के माड्युलेशन, आण्विक प्रक्रियाओं पर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। रुधिर जैवसंश्लेषण क्षमता विहीन लीशमानिया द्वारा हीमोग्लोबिन के अंतःकोशिकीय अपघटन एवं उद्ग्रहण की मध्यस्थता में एक नवीन अभिग्राहक प्रणाली पर उनकी खोज से संकेत मिला है कि किस तरह यह परजीवी अपनी वृद्धि के लिए आवश्यक रुधिर को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने चिकित्सीय तथा अन्य उपयोग हेतु मैक्रोफेज लीनिएज की कोशिकाओं के चयापचय का नियमन करने के लिए स्कैवेंजर-मीडिएटेड एण्डोसिटिक पाथवे के प्रयोग की संभावना का प्रदर्शन करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ मुखोपाध्याय को अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें सी एस आई आर का युवा वैज्ञानिक पुरस्कार, डी बी टी राष्ट्रीय जैवविज्ञान पुरस्कार एवं सी एस आई आर का शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार शामिल हैं। उन्होंने वैज्ञानिक जर्नलों में 20 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं तथा उन्हें 3 पेटेन्ट्स प्राप्त करने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

DR. Y. S. NARAYANA RAO ORATION AWARD
2002

CITATION

DR. AMITABHA MUKHOPADHYAY

Dr. Y. S. Narayana Rao Oration Award is given in alternate years to an eminent scientist for outstanding work carried out in the field of cancer.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. Amitabha Mukhopadhyay, Staff Scientist IV, National Institute of Immunology, New Delhi for his work on "Host pathogen interactions".

Dr. Mukhopadhyay's work has provided important insights into the molecular mechanisms, modulation of intracellular trafficking pathways by the pathogens to survive in phagocytes. His discovery of a new receptor system mediating uptake and intracellular degradation of hemoglobin by Leishmania lacking heme biosynthetic ability suggests how this parasite might meet the requirement of heme essential for its growth. He has also made crucial contributions to demonstrate the feasibility of exploiting the scavenger-mediated endocytic pathway to modulate the metabolism of cells of macrophage lineage for therapeutic and other purposes.

Dr. Mukhopadhyay is the recipient of many national awards like CSIR Young Scientist Award, DBT National Biosciences Award and CSIR Shanti Swaroop Bhatnagar Prize. He has more than 20 publications in scientific journals and 3 patents to his credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ एम.के.शेषाद्री पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

प्रोफेसर एच.एम. स्वामी

डॉ एम. के. शेषाद्री पुरस्कार तथा एक गोल्ड मेडल किसी उत्कृष्ट वैज्ञानिक अथवा संस्था को उनके मौलिक कार्य के द्वारा हुई किसी उपयोगी खोज अथवा सामुदायिक चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित गवर्नमेन्ट मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के निदेशक प्रिंसिपल प्रोफेसर एच.एम.स्वामी को "सामुदायिक चिकित्सा में प्रैक्टिस" पर उनके अनुसंधान कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

प्रो स्वामी को सामुदायिक चिकित्सा/जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में चिकित्सीय, प्रशासनिक, शैक्षणिक एवं अनुसंधान संबंधी पहलुओं पर 30 वर्ष से अधिक अवधि तक कार्य करने का अनुभव है। प्रो स्वामी द्वारा विशेषकर पोलियो उन्मूलन, जराचिकित्सा वयोवृद्धि, जीरोफ्थैलमिया, एड्स एवं पर्यावरणी अभियान के क्षेत्रों में परिचालानात्मक अनुसंधान एवं नवीनकारी सामुदायिक स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रम कार्यान्वित किए गए हैं। चण्डीगढ़ स्थित गवर्नमेन्ट मेडिकल कॉलेज में 12 वर्ष से अधिक अवधि तक विभागाध्यक्ष के रूप में उन्होंने सामुदायिक चिकित्साविज्ञान में विशेषज्ञता विकसित की है तथा चण्डीगढ़ में शहरी स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया है जहां, गुणवत्तायुक्त मेडिकल सुरक्षा प्रदान करने एवं सामुदायिक स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रम के संचालन के साथ-साथ मेडिकल छात्रों को शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ।

प्रो स्वामी ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में 64 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

DR. M.K. SESHADRI PRIZE
2002

CITATION

PROF. H. M. SWAMI

Dr. M. K. Seshadri Prize and a gold medal is awarded to an eminent scientist or institution whose original work has led to useful inventions in or otherwise significantly contributed to the practice of community medicine.

The award for the year 2002 is being presented to Prof. H. M. Swami, Director Principal, Govt. Medical College and Hospital, Chandigarh for his research work on “Practice in Community Medicine”.

Prof. H. M. Swami has over 30 years of experience in clinical, administrative, teaching and research in the field of community medicine/ Public Health. Prof. Swami has implemented innovative community health care programmes and operational research especially in the areas of Polio eradication, Geriatrics aging, Xerophthalmia, AIDS and Environmental Campaign. As Head of the Department for over 12 years at Govt. Medical College, Chandigarh, he has developed the speciality of Community Medicine and established the Urban Health training Centre in Chandigarh which provides teaching and training to medical students, quality medical care and community health care programme.

Prof. Swami has published 64 papers in different national and international journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

आई सी एम आर एम.एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार
2002

प्रशस्ति

डॉ एस.के. शर्मा

आई सी एम आर एम.एन.सेन व्याख्यान पुरस्कार हर दूसरे वर्ष किसी उत्कृष्ट वैज्ञानिक को चिकित्साविज्ञान (चिकित्सीय, प्रयोगशाला अथवा उपचारार्थ) के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्साविज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ एस.के. शर्मा को "भारत में पाए जाने वाले श्वसनी रोगों" पर उनके अनुसंधान कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ शर्मा ने कणिका गुल्मीय (ग्रेन्युलोमैटस) फुप्फुसीय रोगों विशेषतया क्षय रोग एवं सार्काइडोसिस के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने क्षयरोग रोधी औषधियों के कारण यकृतविषाक्तता के विकास हेतु खतरे वाले कारकों एवं भारतीय रोगियों में *एम. ट्युबरकुलोसिस* के बहुऔषध प्रतिरोधी उपभेदों के आण्विक आनुवंशिक विश्लेषण पर अध्ययन किया है। IS6110 एलीमेन्ट को प्रयोग में लाकर भारत से प्राप्त *एम.ट्युबरकुलोसिस* के औषधि प्रतिरोधी आइसोलेट्स की टाइपिंग पर डॉ शर्मा के शोध कार्य के परिणामस्वरूप वास्तविक पॉलीमार्फिज्म का प्रदर्शन हुआ। उनके हाल के कार्य में एच आई वी मुक्त रोगियों में बहु औषध प्रतिरोधी क्षय रोग के विकास हेतु चिकित्सीय एवं आनुवंशिक खतरे के कारकों का मूल्यांकन शामिल है।

डॉ शर्मा को अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अतंर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार, अमृत मोदी युनिकेम पुरस्कार, डॉ आर. एन. चुग व्याख्यान पुरस्कार, चिकित्साविज्ञान के क्षेत्र में डॉ राजमल कास्लीवाल पुरस्कार, सरोज-ज्योति पुरस्कार सम्मिलित हैं। उन्होंने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नलों में 220 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

ICMR M. N. SEN ORATION AWARD
2002

CITATION

DR. S. K. SHARMA

The ICMR M. N. Sen Oration Award is given in alternate years to an eminent scientist for outstanding work carried out in the field of Practice of Medicine (clinical, laboratory or therapeutic).

The award for the year 2002 is being presented to Dr. S. K. Sharma, Prof & Head, Dept. of Medicine, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi for his research work on “Respiratory diseases as seen in India”.

Dr. Sharma has made a significant contribution in the field of Granulomatous Lung Disease specifically Tuberculosis and Sarcoidosis. He has studied the risk factors for the development of hepatotoxicity due to antituberculosis drugs and molecular genetic analysis of multi-drug resistant strains of *M. tuberculosis* in Indian patients. Dr. Sharma’s work on typing of drug resistant isolates of *M. tuberculosis* from India using the IS6110 element reveals substantial polymorphism. His recent work involves evaluation of clinical and genetic risk factors for the development of multi-drug resistant TB in non-HIV patients.

Dr. Sharma is recipient of many prestigious national and international awards including Shakuntala Amir Chand Prize, Amrut Mody Prize, Dr. R. N. Chugh Oration Award, Dr. Rajmal Kasliwal Prize in Medicine, Saroj-Jyoti Award. He has 220 publications in reputed national and international scientific journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

डॉ रेणु सक्सेना

बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार हर दूसरे वर्ष किसी श्रेष्ठ वैज्ञानिक को रुधिरविज्ञान/ प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के रुधिरविज्ञान विभाग की प्रोफेसर डॉ रेणु सक्सेना को "भारत में थ्राम्बोफीलिया के विकृतिजनन" पर उनके कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सक्सेना का प्रमुख योगदान "भारतीयों में थ्राम्बोसिस (घनास्रता) के विकृतिजनन" के क्षेत्र में रहा है। वे प्रथम भारतीय रुधिरविज्ञानी हैं जिन्होंने दर्शाया कि भारतीयों में डीप वेन थ्राम्बोसिस (DVT) तथा स्ट्रोक के मूल में सक्रियकृत प्रोटीन C (APC) प्रतिरोध एक अतिसामान्य दोष है। उन्होंने यह भी पुष्टि की है कि भारत में धमनी एवं शिरा में थ्राम्बोफीलिया में फैक्टर V लीडेन अत्यन्त सामान्य आण्विक दोष होता है। डॉ सक्सेना ने हृद्वाहिकीय रोगियों में हिपैरिन प्रेरित थ्राम्बोसाइटोपीनिया (HIT) की व्यापकता का भी अध्ययन किया है। वे रक्तस्रावी विकारों से सम्बद्ध रोगियों की देखभाल करने एवं वाहक की पहचान करने तथा जन्मपूर्व निदान करने हेतु परामर्श देने के साथ सक्रिय रूप से सम्बद्ध हैं ।

डॉ सक्सेना को उनके कार्य की पहचान हेतु मनोरमा सप्रे व्याख्यान पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्होंने 140 से अधिक वैज्ञानिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

BGRC SILVER JUBILEE ORATION AWARD
2002

CITATION

DR. RENU SAXENA

The BGRC Silver Jubilee Oration Award is given in alternate years to an eminent scientist for outstanding work carried out in the field of Haematology/ Immunohaematology.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. Renu Saxena, Professor, Dept. of Haematology, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi, for her work on “Pathogenesis of thrombophilia in India”.

Dr. Saxena has major contributions in the field of pathogenesis of thrombosis in Indians. She is the first Indian haematologist to demonstrate that Activated Protein C (APC)-resistance is the commonest underlying defect in Deep Vein Thrombosis (DVT) and stroke in Indians. She has also confirmed that Factor V Leiden is the commonest molecular defect in arterial and venous thrombophilia in India. Dr. Saxena has also studied the prevalence of Heparin Induced Thrombocytopenia (HIT) in cardiovascular patients. She is actively involved in care of the patients with bleeding disorders and counselling for carrier detection and prenatal diagnosis.

Dr. Saxena has been felicitated with Manorama Sapre Oration Award in recognition of her work. She has more than 140 scientific publications to her credit.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रोफेसर बी.के. ऐकत व्याख्यान पुरस्कार
2002

प्रशस्ति

डॉ पी. कालीराज

प्रोफेसर बी.के. ऐकत व्याख्यान पुरस्कार हर दूसरे वर्ष एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक को उष्णकटिबन्धीय रोगों के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार चेन्नई स्थित अलागप्पा कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, अन्ना विश्वविद्यालय के जैवप्रौद्योगिकी के प्रोफेसर डॉ पी.कालीराज को "मानव लसीका फाइलेरिया रोग के आण्विक रोगजनन एवं उसके नियंत्रण हेतु आण्विक साधनों के विकास" पर उनके अनुसंधान कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ कालीराज विगत 25 वर्षों से अधिक अवधि से उष्णकटिबन्धीय परजीवी रोगों के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। फाइलेरिया रोग के क्षेत्र में उनके गहन अनुसंधान के द्वारा रोग प्रक्रिया की समझ तथा नैदानिक एवं रोगनिरोधी उत्पादों के विकास तथा प्रयासों पर उपलब्ध जानकारी में वृद्धि हुई है । फाइलेरिया रोग के आण्विक रोगजनन एवं जीनोमिक्स पर डॉ कालीराज के शोध के परिणामस्वरूप 3 मिनट में परिणाम देने वाले प्रतिपिण्ड आधारित त्वरित नैदानिक किट का विकास हुहआ है जिसका विश्व स्तर पर मूल्यांकन किया गया है तथा विशेषतया बच्चों में मानव लसीका फाइलेरिया रोग की पहचान के साथ-साथ आण्विक रोगजानपदिक अध्ययनों हेतु एक विधि के रूप में सिफारिश की गई है । उष्णकटिबन्धीय रोगों के उन्मूलन हेतु विश्वव्यापी कार्यक्रम के अंतर्गत विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा शुरू किए गए फाइलेरियल जीनोम परियोजना में डॉ कालीराज का दल भी एक सहभागी रहा है। फाइलेरिया परजीवी के संपूर्ण जीनोम का क्रमनिर्धारण किया जा चुका है तथा नैदानिक एवं रोगनिरोधी महत्व के 15 अणुओं की पहचान की गई है।

डॉ कालीराज विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों के सदस्य हैं। उन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय जनर्लों में 36 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

PROF. B. K. AIKAT ORATION AWARD
2002

CITATION

DR. P. KALIRAJ

Prof. B. K. Aikat Oration Award is given in alternate years to an eminent scientist for outstanding work carried out in the field of tropical diseases.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. P. Kaliraj, Prof. of Biotechnology, Alagappa College of Technology, Anna University, Chennai for his research work on "Molecular pathogenesis and devising molecular tools for control of human lymphatic filariasis".

Dr. Kaliraj has been working in the field of tropical parasitic diseases for more than 25 years. His intense research in filariasis has added to the existing knowledge in the understanding of the disease process and development of diagnostic and prophylactic products and approaches. Dr. Kaliraj's contribution on the molecular pathogenesis and genomics of filariasis has led to the development of a three minute antibody based rapid diagnostic kit which has been evaluated globally and recommended as a method of choice for identification of human lymphatic filariasis, especially in children, as well as for molecular epidemiological studies. Dr. Kaliraj's group has also been a partner of filarial genome project, initiated by WHO under global programme for elimination of tropical diseases. The entire genome of filarial parasite has been sequenced and 15 molecules of diagnostic and prophylactic importance have been identified.

Dr. Kaliraj is a member of various scientific organizations. He has 36 publications in national and international journals.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रोफेसर सुरिन्दर मोहन मारवाह पुरस्कार
2002

प्रशस्ति

डॉ सी.पन्नीरसेल्वम

प्रोफेसर सुरिन्दर मोहन मारवाह पुरस्कार हर दूसरे वर्ष एक भारतीय वैज्ञानिक को भारत में सतत अनुसंधान के माध्यम से वयोवृद्ध लोगों की समस्याओं के हल के लिए वयोवृद्धि के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार चेन्नई स्थित डॉ ए.एल.मुदलियार स्नातकोत्तर मौलिक आयुर्विज्ञान संस्थान के आयुर्विज्ञानी जीवरसायन विभाग के प्रोफेसर डॉ सी. पन्नीरसेल्वम को "वयोवृद्धि के आण्विक एवं जैव रासायनिक पहलुओं" पर उनके अनुसंधान कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ पन्नीरसेल्वम का प्रमुख अनुसंधान वयोवृद्धि के लिए जिम्मेदार मुक्त मूलकों एवं ऑक्सीकररोधी रक्षा प्रक्रिया के बीच असंतुलन के अध्ययन पर केन्द्रित रहा है । उनके अनुसंधान दल द्वारा एक ऑक्सीकर रोधी, DL अल्फा लाइपोइक अम्ल एवं एक ऊर्जा वर्धक, L कार्निटाइन के सम्पूरण द्वारा मुक्त मूलकों के कुप्रभावों को रोकने की दिशा में कार्य किया गया है। मुक्त मूलक स्कैवेंजिंग (अपमार्जक) गतिविधि के माध्यम से इन औषधियों की संयुक्त क्रियाशीलता के द्वारा वयोवृद्ध लोगों की ऑक्सीकररोधी स्थिति में सुधार आ गया तथा माइटोकॉन्ड्रियल अखण्डता की स्थिति बनी रही और माइटोकॉन्ड्रियल एवं जेनरिक डी एन ए का एपोप्टोटिक प्रपात में जाने से रोका जा सका । ये वयोवृद्धि-रोधी औषधियां मुक्त मूलकों को उदासीन करती हैं तथा इस प्रकार आयु सम्बद्ध व्यपजननकारी विकारों में बाधा उत्पन्न करके गुणवत्तापूर्ण जीवन सुनिश्चित करने में सहायक होती है।

डॉ पन्नीरसेल्वम ने अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जर्नलों में 60 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उनको जीवविज्ञान के क्षेत्र में तमिल नाडु वैज्ञानिक पुरस्कार भी प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

PROF. SURINDAR MOHAN MARWAH AWARD
2002

CITATION

DR. C. PANNEERSELVAM

Prof. Surindar Mohan Marwah Award is given in alternate years to an Indian scientist for significant contributions in the field of Geriatrics, through sustained research in India on the problems of the aged.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. C. Panneerselvam, Professor, Department of Medical Biochemistry, Dr. A.L. Mudaliar, PG Institute of Basic Medical Sciences, Chennai for his research work on "Molecular and biochemical aspects of aging."

Dr. Panneerselvam's major research focus has been to study the imbalance between free radicals and the antioxidant defense mechanism contributing to aging. His research group has worked towards toppling the disastrous effects of free radicals by supplementing an antioxidant, DL–α–lipoic acid and an energy promoter, L carnitine. The combined action of these drugs through free radical scavenging activities improves the antioxidant status in the aged and maintains mitochondrial integrity and prevents mitochondrial and generic DNA from entering into apoptotic cascade. These anti-aging drugs neutralize the free radicals and thus preclude age associated degenerative disorders therapy leading to quality assured life.

Dr. Panneerselvam has 60 publications to his credit, both in international & national journals. He is the recipient of Tamil Nadu Scientist Award in the field of biological sciences.

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

डॉ वी.एन. पटवर्धन पुरस्कार

2002

प्रशस्ति

डॉ जी. भानुप्रकाश रेड्डी

डॉ वी.एन. पटवर्धन पुरस्कार पोषणज विज्ञान में मौलिक, चिकित्सीय अथवा फील्ड अध्ययनों पर भारत में सम्पन्न उत्कृष्ट कार्य के लिए किसी श्रेष्ठ वैज्ञानिक को एक वर्ष के अन्तराल पर दिया जाता है ।

वर्ष 2002 का यह पुरस्कार हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी डॉ जी.भानुप्रकाश रेड्डी को मोतियाबिन्दजनन के संदर्भ में आहारीय एवं पोषणज कारकों पर सम्पन्न उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है ।

डॉ रेड्डी मोतियाबिन्दजनन को रोकने/विलम्बित करने के संदर्भ में आहारीय और पोषणज घटकों के लाभकारी प्रभावों का पता लगाने तथा उनका उपयोग करने पर कार्यरत रहे हैं, यह सरलतम् और मूल्य प्रभावी नीतियों में से एक है । उन्होंने पोषण के साथ आधुनिक जैविकी के अनुभव को मिलाने की एक नवीन नीति को अपनाया है जिसका उद्देश्य नेत्रीय लेंस की लघु हीट शॉक प्रोटीन,एल्फा क्रिस्टैलाइन सहित लेंस प्रोटीनों की संरचना और उनके कार्य के प्रभाव को ज्ञात करना है ।

डॉ रेड्डी द्वारा सम्पन्न अध्ययनों से संकेत मिलता है कि आहारीय प्रतिबंध के परिणामस्वरूप अंतःपात्र विधि में प्रेरित समूहन के प्रति β और γ- क्रिस्टैलिंस की अतिसंवेदनशीलता घट जाती है जबकि विटामिन पर प्रतिबंध के परिणामस्वरूप समूहन में वृद्धि हो जाती है । यह भी पाया गया है कि बहुत कम मात्रा में हल्दी/करक्युमिन के प्रयोग से चूहों में गैलेक्टोज़ और स्ट्रेप्टोज़ोटोसिन प्रेरित मोतियाबिन्द की वृद्धि विलम्बित हो जाती है ।

डॉ रेड्डी भारतीय पोषण सोसाइटी द्वारा जूनियर पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं । उन्होंने 28 शोध पत्र भी प्रकाशित किए हैं ।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

DR. V.N. PATWARDHAN PRIZE
2002

CITATION

DR. G. BHANUPRAKASH REDDY

Dr. V. N. Patwardhan Prize is given in alternate years to an eminent scientist for outstanding work carried out in India on fundamental, clinical or field studies in Nutritional Sciences.

The award for the year 2002 is being presented to Dr. G. Bhanuprakash Reddy, Senior Research Officer, National Institute of Nutrition, Hyderabad for his research work on "Dietary and nutritional factors with regard to cataractogenesis".

Dr. Reddy has been working to explore and utilize the beneficial effects of dietary and nutritional components in terms of preventing/postponing cataractogenesis which is one of the simplest and cost effective strategies. He has adopted the novel strategy of blending modern biology experience with nutrition to understand the effect of functional foods on structure and function of lens proteins including eye lens small heat shock protein, α-crystalline.

Studies carried out by Dr. Reddy indicate that food restriction reduces the susceptibility of β and γ-crystallins to *in-vitro* induced aggregation, whereas vitamin restriction increases the aggregation. It has also been found that turmeric / curcumin at very low levels delay the progression of galactose-induced and streptozotocin-induced cataract in rats.

Dr. Reddy has been awarded Junior Award by Nutrition Society of India. He has 28 publications to his credit.